हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या - 10

कामायनी का दर्शन

कामायनी में व्यक्त मूल दर्शन 'आनन्दवाद' है जिसे शैवाद्वैतवाद तथा प्रत्यभिज्ञा दर्शन भी कहा गया है। वस्तुतः यह शैव तथा वेदांत दर्शनों का मिश्रण है जिसे 'शैवागमन सम्प्रदाय' में स्वीकार किया जाता है। यह उपनिषदों के 'सर्ववादी सिद्धांत' पर आधारित है जिसके अनुसार यह जगत ब्रह्म या महाचिति की ही अभिव्यक्ति है। यह शंकराचार्य के समान जगत को ब्रह्म का विवर्त या मिथ्या कहकर परिभाषित नहीं करता अपितु जगत और महाचिति (ब्रह्म) में अभेद मानता है। इसके अनुसार जगत महाचिति का भ्रम नहीं है बल्कि उसकी अभिव्यक्ति ही है। चूँकि महाचिति लीलामय व मंगलमय है इसलिए जगत भी मंगलमय है और इसके प्रति अनुराग होना स्वाभाविक है -

"यह रही लीलामय आनन्द, महाचिति सजग हुई सी व्यक्त
विश्व का उन्मूलन अभिराम, इसी में सब होते अनुरक्त

इस दर्शन के अनुसार मनुष्य की मूल समस्या 'विषमता' है जिसका तात्पर्य है इच्छा क्रिया तथा ज्ञान में समन्वय का अभाव।

जब व्यक्ति विषमता की स्थिति में होता है तो उसका जीवन दुःखों से भरा होता है।-
ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सके, यह विडम्बना है जीवन की।

विषमता से समरसता की इस यात्रा को ~~इस भाग~~ शैवाद्वैतवाद में पाँच कोशों तथा तीन स्थितियों के माध्यम से व्याख्यायित किया गया है पाँच कोश हैं इस प्रकार - अन्नमय प्राणमय, मनोमय, विज्ञान मय तथा आनन्दमय। यह कल्पना उपनिषदों से ली गई है कामायनी में चिन्ता से ईर्ष्या सर्ग तक मनु मनोमय कोश में स्थित जीव का प्रतीक है। इड़ा सर्ग विज्ञानमय कोश का प्रतीक है। जबकि अंतिम सर्ग 'आनन्द' आनन्दमय कोश का प्रतीक है।

कामायनी में आनन्दवाद के अतिरिक्त भी कई दर्शनों का प्रभाव दिखता है इनमें से कुछ दर्शन प्राचीन है तो कुछ नवीन। जो नवीन दर्शन हैं उनमें गाँधीवाद जैसे दर्शन भी हैं और डार्विन, मार्क्सवाद, फ्रायड आदि विचारकों के पश्चिमी दर्शन भी हैं।

1.) क्षणवाद :- क्षणवाद दर्शन वह दर्शन है जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व क्षण मात्र के लिए होता है। भारत में हीनयान

बौद्ध दर्शन ने इसे स्वीकार किया तो पाश्चात्य दर्शन में हेराक्लाइटस तथा बर्गसां आदि के विचारों में यह दिखता है। प्रसाद के अनुसार मनुष्य का जीवन भी क्षण के रूप में ही है क्योंकि हर क्षण परिवर्तन हो रहा है:-

"जीवन तेरा क्षुद्र अंश है, व्यक्त नील घन माला में,
सौदामिनी संधि सा सुंदर, क्षण भर रहा उजाला में"

2.) गाँधीवाद :- गाँधीजी का दर्शन अहिंसा तथा हृदय परिवर्तन की धारणाओं से संरचित हुआ है। कामायनी में श्रद्धा का चरित्र मूलतः गाँधीवादी मानसिकता का ही प्रतीक है। वह मनु का हृदय परिवर्तन करती है। वह अहिंसा का भी पक्षधर है। मनु के हिंसा यज्ञ के संदर्भ में उसका पशुओं के हित में है:-

"ये प्राणी जो बचे हुए हैं इस अचला जगती के,
उनके कुछ अधिकार नहीं क्या, ये सब ही हैं फीके।"

3.) फ्रायड:- सिग्मंड फ्रायड का दर्शन 'मनोविश्लेषणवाद' कहलाता है जिसके अनुसार मनुष्य की व्याख्या मूलतः उसकी काम चेतना के आधार पर होती है। यह दावा करना कठिन है कि प्रसाद पर फ्रायड का प्रभाव था या नहीं। किन्तु कुछ आलोचकों ने उनके कामायनी मनु पर इसकी छाप देखी है।

कामाध्यात्मक का अर्थ है कि अध्यात्मवाद का मार्ग काम चेतना के विरुद्ध नहीं है अपितु काम चेतना स्वयं अध्यात्म की उपलब्धि का ही मार्ग है।

4.) मार्क्सवाद :- कामायनी पर मार्क्सवाद का भी प्रभाव है आचार्य शुक्ल ने भी माना है कि कामायनी में वर्ग संघर्ष की दबी हुई अनुगूँज सुनाई देती है।

5.) डार्विन :- डार्विन और स्पेंसर के 'शक्ति ~~स्प~~ स्पर्धावाद' का भी प्रभाव भी प्रसाद पर दिखाई देता है। वे कहते है कि :-

"स्पर्धा में जो उत्तम ठहरें, वे रह जावें,
संसृति का कल्याण करें शुभ-मार्ग बतावें।"

प्रस्तुतकर्त्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० नं० - 8292271041

दिनांक
14/10/2020